उपशास्त्री, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ० द्वि०-पत्र

दिगंत- भाग- 2. पद्य भाग, शीर्षक:- 'पुत्र वियोग'

कवयित्री- सुभद्रा कुमारी चौहान

महत्वपूर्ण अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या-

थपकी दे दे जिसे सुलाया
जिसके लिए लोरियाँ गाईं
जिसके मुख पर जरा मलिनता
देख आँख में रात बिताई

प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक दिगंत- भाग- II की 'पुत्र वियोग' शीर्षक कविता से उद्धृत है। इसकी रचनाकार सुभद्रा कुमारी चौहान हैं। कवयित्री पुत्र वियोग से मर्माहत है, अपनी कारुणिक पीड़ा में उसे विगत की स्मृतियाँ झकझोर देती हैं।

कवयित्री अपने पुत्र को थपकी देकर सुलाने का प्रयास करती है। उसे लोरियाँ गाकर सुनाती है। उसके मुख पर उदासी देखकर अनेक रातें जागकर व्यतीत करती है।

कवयित्री उपरोक्त पद्यांश में अपने सहज-स्वाभाविक दायित्वों तथा प्रयासों की चर्चा करते हुए अपनी गहन संवेदना को अभिव्यक्त कर रही है। बच्चे के मनचलेपर माँ लोरियाँ गाकर अपने बच्चों को सुलाती है। पुत्र की जरा सी भी अस्वस्थता पर रात-रात भर जगकर बिता देती है। कवयित्री की अधीरता स्पष्ट दिखाई पड़ती है।

प्रस्तुत पद में माँ की ममता का जो वास्तविक स्वरूप होता है वह दिखाई पड़ रही है। इसलिए कहा गया है- माँ तो माँ होती है। वह अपने जिगर के टुकड़े को पल भर के लिए दुःखी नहीं देख सकती है।

डॉ० देव चरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी
रा०उ० सं० महा वि० धुरखसेना, पूर्णियाँ

11|09|20

शास्त्री द्वितीय खण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ०द्वि०-पत्र
'पथिक' काव्य
कवि - श्रीराम नरेश त्रिपाठी

Date ______ Page ______

महत्वपूर्ण अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या

"एक व्यक्ति निर्दयी निरंकुश बन बैठा अधिकारी।
शासन है कर रहा तुम्हीं पर लेकर शक्ति तुम्हारी॥
अत्याचार स्वयं अपने ही ऊपर तुम करते हो।
अपने हाथों ही अपने को मार- मार करते हो॥

प्रसंग- प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक 'पथिक खण्ड-काव्य से उद्धृत है। इसके रचयिता प्रकृति के महान कवि श्री रामनरेश त्रिपाठी जी हैं। इस पद में कवि ने राजा के निरंकुशता का विस्तार से वर्णन किया है।

प्रस्तुत पद्यांश के माध्यम से कवि कहता है कि एक राजा निरंकुश बनकर जो प्रजा पर अत्याचार कर रहा है, वह प्रजा की सहायता से ही कर रहा है। प्रजा यदि राजा का साथ देना छोड़ दे तो राजा अकेला क्या कर सकता है। अन्यायी, अधर्मी राजा का साथ देना पाप है। कवि कहता है कि प्रजा स्वयं इसके लिए जिम्मेवार है। प्रजा अपने हाथों से ही अपने लोगों को मारने के लिए तैयार है। जब तक प्रजा इस पाप से निवृत्त नहीं होगी तब-तक उसका कष्ट दूर नहीं हो सकता है।

कवि का कहने का अभिप्राय यह है कि राजा जब निरंकुश हो जाय और आम प्रजा के ऊपर अत्याचार करना शुरु कर दे तो ऐसी स्थिति में प्रजा को राजा का साथ नहीं देना चाहिए। समस्त प्रजा को एकजुट होकर उसका विरोध करना चाहिए। परन्तु विरोध अहिंसात्मक होना चाहिए। अहिंसा के सिद्धान्त पर चलकर ही हम निरंकुश शासक से मुक्ति पा सकते हैं। गाँधीवादी दर्शन भी यही सन्देश देता है।

डॉ० देव चरण प्रसाद
1/09/20
एसो० प्रो० हिन्दी
रा० उ० सं० महावि० सुरसेना, पूर्णियाँ

शास्त्री प्रथम खण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ०हि० - पत्र

जयद्रथ-वध

कवि - मैथिली शरण गुप्त

" मति, गति, सुकृति, धृतिपूज्य, पति, प्रिय, स्वजन, शोभन संपदा,
हा! एक ही जो विश्व में सर्वस्व था तेरा सदा।
यों नष्ट उसको देखकर भी बन रहा तू भार है!
हे कष्ट मय जीवन! तुझे धिक्कार बारम्बार है ।।

भावार्थ

प्रस्तुत पद्यांश जयद्रथ-वध के द्वितीय से उद्धृत है। वीर अभिमन्यु के मृत्यु के उपरांत उत्तरा विलाप करती हुई कहती है कि आप तो बुद्धिमान थे, गतिवान थे, बड़े धर्मात्मा थे, धैर्यशाली थे, आदरणीय पति थे, प्रिय थे तथा शोभायमान धन के समान सब कुछ आप हमारे थे। इस संसार में आपके अतिरिक्त मेरा और कौन था। वह सब आज नष्ट हो गया। उसे नष्ट होता देखकर अब अपना जीवन भार स्वरूप हो रहा है। वह कहती है हे मेरे कष्टपूर्ण जीवन तुझको बार-बार धिक्कार है।

कवि मैथिलीशरण गुप्त की यह रचना उस समय लिखी गयी थी जब हमारे देश राष्ट्रीय आन्दोलन अपने चरम उत्कर्ष पर था। कवि राष्ट्र के नौजवानों को यह सन्देश देना चाहते हैं कि जब-जब राष्ट्र पर किसी भी प्रकार की विपत्ती आयी है, तब-तब देश के हमारे वीर नौजवानों आगे बढ़कर अपनी मातृभूमि की रक्षा की है। वीर अभिमन्यु का उदाहरण देकर उसे अपने गौरवशाली परंपरा की याद दिलाते हैं।

कवि ने उत्तरा के विलाप का मार्मिक चित्रण किया है। स्वाभाविक है एक नारी के लिए उसके जीवन में उसका पति ही सर्वस्व होता है। जब वही नहीं रहा तो नारी का विलाप हृदय को चीर देने वाला होता है।

डॉ० देवचरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी
रा० कृ० सं० महावि० कुरवसेना, पूर्णियाँ

11/09/20